Date: - 13-04-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Sneha babli 1987@gmail.com
Cont. no - 8409587640

Class - B.A.I (Hons)

Topic - An Introduction of Charvaka Philosophy.

Scanned with CamScanner

चार्वाक दर्शन (Charvaka Philosophy)

सामान्य परिचय – चार्वाक का जड़वाद या भौतिकतावाद भारतीय दर्शनों में सबसे प्राचीन है। भारतीय दर्शन में यह एकमात्र जड़वादी या भौतिकतावादी दर्शन है। भौतिकवाद वह विचारधारा है जिसमें पदार्थ या जड़ (Matter) को ही मूल तत्व माना जाता है तथा जड़तत्व से ही आत्मा (चेतना), मन तथा अन्य सभी सांसारिक वस्तुओं की उत्पत्ति मानी जाती है। यद्यपि इसमें भौतिकवादी मान्यताओं का उल्लेख वैदिक काल से ही प्राप्त होता है तथापि भारतीय परम्परा में इसे तार्किक आधार पर व्यवस्थित करने का श्रेय चार्वाक दर्शन को ही जाता है। एक मत के अनुसार इसके प्रवर्तक ने सर्वप्रथम 'चार्वाक' नामक शिष्य को इसका उपदेश दिया। एक अन्य मत के अनुसार चार्वाक नामक राक्षस के द्वारा इस मत का प्रवर्तन होने के कारण इसे चार्वाक कहा गया। कुछ विद्वानों के अनुसार चार्वाक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'चर्व' धातु से हुयी है। इसका अर्थ है, चबाना या भोजन

Scanned with CamScanner

करना। चूँकि चार्वाक मत में 'खाने, पीने और मौज उड़ाने' को ही व्यक्ति का परम पुरुषार्थ माना जाता है, अतः इसे चार्वाक कहा गया है। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चूँकि इस मत के समर्थक मधुर (चारु) वाणी (वाक्) का प्रयोग करते थे, अतः इस विचारधारा को चार्वाक कहा गया। इस विचारधारा को 'लोकायत दर्शन' भी कहते हैं, क्योंकि इसमें इस प्रत्यक्ष लोक (जगत्) की ही एकमात्र सत्ता को स्वीकार करके 'परलोक' का निषेध किया जाता है अथवा यह जन सामान्य की रुचि का प्रतिनिधित्व करता है।

परम्परया देवताओं के गुरु 'बृहस्पति' को इस दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि बृहस्पति ने इस दर्शन का प्रसार दानवों के बीच उनके विनाश के लिए किया था। वर्तमान समय में इस विचारधारा का प्रतिपादन करने वाला कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं प्राप्त होता है। इस दर्शन के विषय में शास्त्रीय प्रमाण बृहस्पति के सूत्र कहे जाते हैं जो अब विलुप्त हो गये हैं। वर्तमान में हमें इस दर्शन के विषय में जो भी जानकारी मिलती है उसका आधार अन्यान्य सम्प्रदायों के विवादात्मक ग्रन्थन हैं जिनमें इसका खण्डन हुआ है। 'सर्वदर्शन-संग्रह' के प्रवक्ता

Scanned with CamScanner

अध्ययन में इस सम्प्रदाय की विद्या का सार प्राप्त होता है।

भारतीय विचारधारा में दीर्घकाल से चार्वाक दर्शन उपहास का विषय रहा है। आस्तिक दर्शनों में इसका विशेष रूप से उपहास प्राप्त होता है। सम्भवतः इसका कारण चार्वाक दर्शन द्वारा वेदों के प्रामाण्य का विरोध रहा हो। वास्तव में इसके उपहास का इससे भी अधिक प्रभावी कारण इसका दुर्बल नैतिक ~~पक्ष~~ पक्ष रहा है। जिसने सामाजिक व्यवस्था और नैतिक उत्तरदायित्व की बुनियाद को हिलाकर रख दिया। इसने अध्यात्म एवं परम्परा के निषेध के साथ मानव जीवन के आधारभूत मूल्यों का भी निषेध किया जिसके कारण यह भारतीय परम्परा में उपहास का विषय बना। उल्लेखनीय है कि मानव जीवन के आधारभूत मूल्यों की स्वीकृति ने वेद-प्रामाण्य के विरोध एवं ईश्वर के निषेध के बावजूद जैन एवं बौद्ध धर्मों की लोकप्रियता को बरकरार रखा।

Scanned with CamScanner